बोल अरी ओ धरती बोल

व अन्य गीत

प्रतिध्वनि

बोल अरी ओ धरती बोल व अन्य गीत

संकलन: प्रतिध्वनि, दिल्ली

चित्र: प्रागैतिहासिक शैलचित्र

पहला संस्करण: मार्च, 1995/3,000 प्रतियाँ

प्रथम पुनर्मुद्रण: जनवरी,1998/3,000 प्रतियाँ

दूसरा पुनर्मुद्रण: मार्च, 2001/5,000 प्रतियाँ

तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च, 2010/3,000 प्रतियाँ

70 gsm मेपलिथो एवं 150 gsm पल्प बोर्ड कवर

ISBN: 978-81-87171-10-2

मूल्य: 12.00 रुपए

प्रकाशक: एकलव्य

ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोन: (0755) 255 0976, 267 1017

फैक्स: (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीय: books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: श्रेया ऑफसेट, भोपाल, फोन: (0755) 427 5001

कुछ बातें

बात सन् 1978 की है। दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने एक ग्रुप बनाया - नाम रखा प्रतिध्वनि। इस छोटे से ग्रुप के लोग एक छोटा-सा प्रयास कर रहे थे - ये लोग साथ मिलकर गीत गाना चाहते थे। गीत तो हम सब गाते हैं लेकिन इनके मन में एक खास बात थी। ये लोग ऐसे गीत गाना चाहते थे जो आम लोगों के सपनों और अरमानों से जुड़े हों। इसीलिए इन्होंने फैज़ अहमद फैज़ और साहिर लुधियानवी जैसे कवियों के गीत गाए। इन गीतों में गरीबी, बेरोज़गारी और जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है।

प्रतिध्वनि के साथी एक और महत्वपूर्ण कोशिश कर रहे थे। हमारे देश के गांवों में खूबसूरत गानों की एक विकसित परंपरा है। ये लोक-गीत सैकड़ों-हज़ारों वर्षों से गाए जाते रहे हैं। लोगों की ज़ुबान से नाचते, लुढ़कते, गिरते हुए इन गीतों में बच्चों की सी सरलता है।

पिछले तीस-चालीस वर्षों में फिल्म के संगीत का प्रभाव बढ़ा है। गांवों में शादी-ब्याह, पर्व-त्यौहार आदि के अवसर पर लोग अब खुद गीत नहीं गाते, बल्कि लाऊडस्पीकर पर फिल्मी गीत बजाते हैं। धीरे-धीरे लोग अपने गीत भूलने लगे हैं। लोग यदि अपने गीत भूल जाएं, अपनी संस्कृति भूल जाएं तो वे एक ऐसी 'मूक संस्कृति' के युग में प्रवेश करेंगे जहां वे अपना दुख और सुख भी सिर्फ बंबई की फिल्मों की भाषा में व्यक्त कर पायेंगे। फिल्मों में भी बहुत से खूबसूरत गीतों की रचना हुई है - लेकिन उनका एक विशेष संदर्भ है - एक शहरी उपभोक्तावादी और दिखाऊ संस्कृति का। इन गीतों के प्रसार का कारण सिर्फ उनकी

खूबसूरती ही नहीं रही है। शायद ज़्यादा बड़े कारण रहे हैं : एक शक्तिशाली वर्ग द्वारा अत्याधुनिक संयंत्रों से इनका प्रचार।

लोक गीतों में गांव की मिट्टी का सोंधापन है और वे हज़ारों भाषाओं में लोगों के अपने सहज और अच्छे-बुरे अनुभवों को व्यक्त करते रहे हैं। प्रतिध्वनि के दोस्तों ने जब इन गीतों को इकट्ठा करना शुरू किया तब उन्हें एक नई बात समझ में आई - तमाम गीत जहां आम लोगों के दर्द और संघर्ष की कहानी कहते हैं वहीं दूसरे गीत उनकी खुशी, उम्मीद और जीवन के प्रति उनकी सकारात्मक मनोवृत्ति को दर्शाते हैं। इसीलिए लोकगीत प्रगतिशील हैं।

प्रस्तुत संग्रह में हिन्दी गीतों के अलावा तेलुगु, असमिया और बांग्ला जैसी भाषाओं के गीत भी रखे गए हैं। प्रतिध्वनि एक छोटा-सा प्रयास है। उम्मीद यह है कि इस संकलन को पढ़ने वाला हरेक पाठक एक बार फिर अपने गांव और परिवेश के गीतों को गाना, गुनगुनाना और इकट्ठा करना शुरू कर देगा और शुरुआत होगी एक नई समझ की।

पुनश्च :

जो गीत हिन्दी भाषा के नहीं हैं उनको लेकर एक समस्या थी - उन भाषाओं के शब्दों को देवनागरी लिपि में सही-सही लिखना संभव नहीं। जैसे कि बांग्ला, उड़िया आदि में **'अ'** और **'ओ'** के बीच के कई उच्चारण होते हैं। तेलुगु में शब्दों का अन्त **'अ'** और **आ** के बीच के उच्चारण से होता है। इन कारणों से गीतों में थोड़ी अशुद्धियां नज़र आ सकती हैं और उन्हें सुधारने का एकमात्र उपाय है उस भाषा को बोलने वाले व्यक्ति से गीत गवाना और गवाना। फिलहाल हम कम से कम गाना तो गाएं - गलत ही सही।

गीतों की सूची

हिन्दुस्तानी गीत

भोजपुरी गीत

छत्तीसगढ़ी गीत

पहाड़ी गीत

राजस्थानी गीत

बांग्ला गीत

असमिया गीत

उड़िया गीत

तेलुगु गीत

आदिवासी बोली के गीत

मिल के चलो

ये वक्त की आवाज़ है मिल के चलो
ये ज़िन्दगी का राज़ है मिल के चलो
चलो भाई, मिल के चलो - 3

आज दिल की रंजिशें मिटा के आ . . .
आज भेद-भाव सब भुला के आ . . .
आज़ादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम
कदम-कदम से और दिल से दिल मिला के आ . . .
मिल के चलो . . .

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के
जैसे शोले बन के बढ़ें आग के
जिस तरह चिराग से जले चिराग
ऐसे चलें भेद तेरा मेरा त्याग के।
मिल के चलो . . .

ये भूख क्यूं ये ज़ुल्म का ये ज़ोर क्यूं
ये जंग-जंग-जंग का है शोर क्यूं
हर इक नज़र बुझी-बुझी हरेक दिल उदास
बहुत फरेब खाए हम और फरेब क्यूं।
मिल के चलो . . .

● प्रेम धवन

कवि प्रेम धवन इप्टा में सक्रिय थे। इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (इप्टा) की स्थापना चालीस के दशक में हिन्दुस्तान भर के कुछ संवेदनशील कलाकारों ने की थी।

(अगले पृष्ठ पर जारी)

जागा सारा संसार

ओ, जागा रे जागा रे जागा सारा संसार
फूटी किरण लाल खुलता है पूरब का द्वार
ओ, जागा रे . . .

अंगड़ाई लेती ये धरती उठी है
सदियों की ठुकराई मिट्टी उठी है
ओ, टूटे हो टूटे गुलामी के बन्धन हज़ार

ओ, जागा रे . . .
आया ज़माना हो अपना ज़माना
किस्मत का ये रोना गाना पुराना
ओ, बदलेंगे हम अपने जीवन की नदिया की धार
ओ, जागा रे . . .

हर भूखा कहता है यूं न मरूंगा
मैं जा के मालिक को नंगा करूंगा
ओ, ढहा दूंगा दुखियारी लाशों पे उट्ठी दीवार
ओ, जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

● इप्टा

(पिछले पृष्ठ से)
अंग्रेज़ों के शासन के दौरान भारतीय कला और संस्कृति का पतन हो गया था। इप्टा के कलाकार कला को जन-संस्कृति से जोड़ना चाहते थे। उनका मानना था कि कला तभी रचनात्मक हो सकती है जब वह आम लोगों के जीवन से जुड़ जाए। अंग्रेज़ों और अमीर तबकों के खिलाफ जो जन-आंदोलन इस काल में उभरे उनमें भी इप्टा के लोगों ने हिस्सा लिया। इप्टा के कई
(अगले पृष्ठ पर जारी)

घुमड़ आए बदरा

माझी रे . . . साथी रे . . .
घुमड़ आए बदरा माझी रे
घुमड़ आए बदरा साथी रे
ओ हो हो . . .

उमड़ा सागर ढलता सूरज
सांझ की बेला आई, हैया रे हैया
अंधियारे ने जाल बिछाया
सांझ की बदरी छाई, हैया रे हैया
घुमड़ आए बदरा . . .

छोड़ न देना धीरज साथी
तोड़ न मन की आशा, हैया रे हैया
पल दो पल की बात है साथी
पास है घोर निराशा, हैया रे हैया
घुमड़ आए बदरा . . .

● इप्टा

(पिछले पृष्ठ से)
सदस्य तत्कालीन कम्युनिस्ट पार्टी से भी जुड़े हुए थे। इप्टा के सदस्य गांवों में, कल-कारखानों के सामने अपने नाटक और गीत प्रस्तुत करते थे।

ऋत्विक घटक और उत्पल दत्त जैसे फिल्म निर्देशक, सलिल चौधरी, हेमन्त कुमार और रविशंकर जैसे संगीतकार, साहिर लुधियानवी और कैफी आज़मी जैसे कवि और बलराज साहनी जैसे कलाकार इप्टा से जुड़े हुए थे। आज के कई प्रचलित जनगीत इप्टा की ही देन हैं। ●

हो सावधान आया तूफान

हो सावधान आया तूफान
पर दूर नहीं है किनारा
हम ही मुसाफिर हम ही खिवैया
हम सब हिम्मत वाले
निकल पड़े हैं मौजों से खेलने
देशभक्त मतवाले
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

है भय कोई? कोई भय नहीं
है डर कोई? कोई डर नहीं
फिर दूर नहीं है किनारा - 3
अजगर बन के गरज रहा है
सागर बाधाओं का
एक हैं हम तो चमक रहा है
तारा आशाओं का
वीर बढ़ चलो, धीर धर चलो . . .

साम्राज्य के छल से लड़ो
आज़ादी की खातिर
खूनी चंचल दल से लड़ो
आज़ादी की खातिर
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

● इप्टा

अब जाग उठो

अब जाग उठो तैयार हो लख कोटी भाईयो
हम भूख से मरने वाले न मौत से डरने वाले
आज़ादी का डंका बजाओ उठाओ लाल निशान
ये एकता की पुकार आती है बार-बार
हो तैयार हो तैयार
मज़दूर होशियार ओ किसान होशियार
मालिक के अत्याचार अब नहीं करेंगे स्वीकार
होशियार होशियार होशियार

● इप्टा

फ्रांसीसी क्रांति के गीत की धुन पर आधारित ये गाना दुनिया भर में मशहूर है और इसे अलग-अलग भाषाओं में, लेकिन उसी धुन में गाया जाता है। ●

जंग-ए-आज़ादी

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की महकूमों की, मज़लूमों की
आज़ादी के मतवालों की
दहकानों की, मज़दूरों की।

सारा संसार हमारा है,
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
हम अफरंगी हम अमरीकी
हम चीनी जावा जान-ए-वतन
हम सुर्ख़ सिपाही ज़ुल्म शिकन
आहन पै कर फौलाद बदन।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . . .

वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या
दुश्मन जिसमें ताराज़ न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी
जिस दुनिया में स्वराज न हो
वो आज़ादी आज़ादी क्या
मज़दूर का जिसमें राज न हो।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . . .

लो सुर्ख़ सवेरा आता है आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार तराना गाता है आज़ादी का आज़ादी का
देखो परचम लहराता है आज़ादी का आज़ादी का
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . .

● मखदूम मोहिउद्दीन

इस गाने के रचनाकार आन्ध्र प्रदेश के मखदूम मोहिउद्दीन हैं। आप उर्दू के मशहूर कवि और सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता थे। आपने तेलंगाना के किसान विद्रोह में हिस्सा लिया था। ●

क्रान्ति के लिए उठे कदम

क्रान्ति के लिए उठे कदम
क्रान्ति के लिए जले मशाल।

भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रात के लिए
जुल्म के खिलाफ जीत के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली कसम।

छिन गई हैं आदमी की रोटियां
बिक गई हैं आदमी की बोटियां
किन्तु दुष्ट भर रहे हैं कोठियां
लूट का ये राज हो खतम।

● शंकर शैलेन्द्र

नैया पार लगा

अब मचल उठा है दरिया
अब सर पर घिरी बदरिया
उनचास पवन डोले झंझा की बजे बसुरिया
नैया पार लगा हो नैया पार लगा।

ओ भंवर हज़ारों गहरी धारा, गहरी धारा
मंज़िल का है दूर किनारा, दूर किनारा
ओ भटक न जाना काली रात खिवैया।
हो नैया पार. . .

ओ निर्बल चप्पु डरना कैसा, डरना कैसा
तन में दम हो तो ग़म कैसा, तो ग़म कैसा
ओ उम्मीदों के पाल उड़ा खिवैया।
हो नैया पार. . .

सुबह सुहानी तुझे पुकारे, तुझे पुकारे
साहिल तेरी राह निहारे, राह निहारे
ओ सपने सुहाने सच होंगे खिवैया।
हो नैया पार लगा. . .

● इप्टा

काली नदी को करें पार

ओ मेरे देशवासी रे
आओ रे राम भाई आओ रहीम भाई
काली नदी को करें पार।

बीच इस देश के
शैतान ले आए हैं दंगे फसादों की बाढ़
डूबा सैलाब में सारे वतन का मान
हेई! नफरत की नदी पर पुल हो गर बांधने
ले गैंती और औज़ार।
हे हेंइयां ओ हेंइयां
बांधो सेतु जवानों इस बार।

नदिया ये हम सब के खून का दरिया। हेंइयां. . .
नदिया ये हम सब के अश्कों का दरिया। हेंइयां. .
नदिया ये हम सब के दर्दों का दरिया। हेंइयां. . .
दोनों किनारों से हाथ हम बढ़ाएं। हेंइयां. . . .
नदिया के दलदल में घड़ियाल छुपे हैं
छीने सुख चैन उजाड़ें घर बार। हेंइयां. . .
ओ मेरे देशवासी रे. . .
हेंइयां हो मार जोड़ बांध सेतु बांध रे
बांध सेतु बांध रे - 4

लेके हाथों में हाथ बढ़ें हम साथ-साथ भाई रे
हेंइयां हो मार जोर. . . 2
दुश्मन की चालों को एकता की ठोकर से तोड़ें रे
हेंइयां हो. . .
छोड़ भेदभाव समता का देश बनाएं रे।

● सलिल चौधरी

तुम्हें वतन पुकारता

तुम्हें वतन पुकारता वतन तुम्हारा नौजवान
जागे हैं वतन के लोग जागा है सारा जहां
आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

बीत गए यूं ही तो बहुत दिन
वक्त मांगे एकता विभेदहीन
तुम्हारा प्रण मेरा वतन जगाएगा नवचेतना
पुकारता. . . आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

कभी तो आएगा वो दिन सुबह
मुस्कुरायेगी नहीं है डर
चिराग जले ये रात ढले
ढले ये ग़म के चार दिन।

कभी तो आएगा समीर झूमके
खिलेंगे सौ फूल उसे चूमके
सदियों से जो सोये हैं अंगड़ाई लेके उठेंगे
पुकारता. . . आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

● सलिल चौधरी

मूल बांग्ला। हिन्दी रूपान्तर प्रतिध्वनि। ●

ज़िंदगी की जीत में यकीन कर

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

सुबह शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूमकर
तू आ मेरा श्रृंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है. . .

हज़ार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी चली गई वो हारकर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है. . .

ये ग़म के और चार दिन सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुज़र गुज़र गए हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन में भी बहार की नज़र
अगर कहीं है. . .

● इप्टा

बोल अरी ओ धरती बोल

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

बादल बिजली रैन अंधियारी
दुख की मारी परजा सारी
बच्चे बूढ़े सब दुखिया हैं
दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है
सब बनिये हैं सब ब्योपारी।

बोल अरी ओ. . .

क्या अफरंगी क्या तातारी
आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी
कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाये के धन्धे
कब तक ये सरमायादारी।

बोल अरी ओ. . .

नामी और मशहूर नहीं हम
लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें
ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पांव के नीचे
मंज़िल से अब दूर नहीं हम।

बोल अरी ओ. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

बोल कि तेरी ख़िदमत की है
बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये हैं
बोल कि तेरा दूध पिया है

बोल कि हमने हश्र उठाया
बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती।

बोल अरी ओ. . .

● मजाज़ लखनवी

इप्टा से जुड़े हुए लखनऊ के मशहूर शायर।
धुन - प्रतिध्वनि। ●

वो सुबह कभी तो आएगी

इन काली सदियों के सर से
जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा
जब धरती नग़में गायेगी
वो सुबह कभी तो आएगी - 2

बीतेंगे कभी तो दिन आख़िर
ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो बुत आखिर
दौलत की इज़ारादारी के
जब एक अनोखी दुनिया की
बुनियाद उठाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी. . .

मनहूस समाजी ढांचों में
जब ज़ुल्म न पाले जाएंगे
जब हाथ न काटे जाएंगे
जब सर न उछाले जाएंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की
सरकार चलाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

संसार के सारे मेहनतकश
खेतों से मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सान
तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन, खुशहाली के
फूलों से सजाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी...

● साहिर लुधियानवी

साहिर (1912-80) स्वतंत्रता और कम्युनिस्ट आंदोलन से जुड़े थे। बाद में हिन्दी फिल्मों के लिए बहुत से खूबसूरत गीत लिखे। प्रतिध्वनि ने भी इस गीत की धुन बनाई है। ●

तुम्हारे हाथ

तुम्हारे हाथ पत्थरों की तरह संगीन हैं
जेल में गाए गए गीतों की तरह उदास हैं
बोझ ढोने वाले पशुओं की तरह
सख़्त हैं सख़्त हैं सख़्त हैं
तुम्हारे हाथ भूखे बच्चों के तमतमाये
चेहरों की तरह हैं
तुम्हारे हाथ मधुमक्खियों की तरह दक्ष हैं
ये जहां तुम्हारे हाथों पर नाचता रहता है
ये जहां।

तुम्हारे हाथ...

आ मेरे लोगों आ मेरे लोगों
यूरोप के लोगों अमरीकी लोगों
सारी दुनिया के लोगों, तुम सतर्क हो, हिम्मती हो
फिर भी अपने हाथों की तरह खोए हुये हो
फिर भी तुम परवशी बनाये जाते रहे हो।
आ मेरे लोगों आ मेरे लोगों

तुम्हारे हाथ...

आ मेरे लोगों, आ मेरे लोगों
एशियाई लोगों अफ्रीकी लोगों
मध्य पूर्व के लोगों मेरे अपने देश के लोगों
तुम अपने हाथों की तरह घिसे हुए कठोर हो
तुम अपने हाथों की तरह तरोताज़ा युवा हो

तुम्हारे हाथ...

● नाज़िम हिकमत

नाज़िम हिकमत की मशहूर कविता जिसका सारी दुनिया में अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया है। हिन्दी रूपान्तर - शिवमंगल सिद्धान्तकर। इस गद्य कविता की धुन

(अगले पृष्ठ पर जारी)

बुनियाद हिलनी चाहिए

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

● दुष्यन्त कुमार

दुष्यन्त कुमार की इस गजल को धुनबद्ध किया है प्रतिध्वनि ने। ●

(पिछले पृष्ठ से)

बनाकर प्रतिध्वनि ने इसे गाने के रूप में सजाया है। नाजिम हिकमत (1902-63) तुर्की भाषा के मशहूर कवि थे। वे वहां के कम्युनिस्ट आंदोलन से जुड़े रहे थे। इस सिलसिले में वहां की सरकार ने उन्हें कई बार जेल में रखा। 1950 में जेल से रिहाई के बाद उन्हें देश छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। ●

नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन

वो हमारे गीत क्यों रोकना चाहते हैं
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

हम अपनी आवाज़ उठा रहे हैं
वो नाराज़ क्यों - 2
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

वो डरते हैं ज़िन्दगी से, वो डरते हैं मौत से,
वो डरते हैं इतिहास से,
वो डरते हैं, रॉबसन।

हमारे ये कदमों से डरते हैं
जनता की ये चेतना से डरते हैं, रॉबसन
वो क्रान्ति के जय-डम्बरू से डरते हैं, रॉबसन
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

● नाज़िम हिकमत

मूल रचना तुर्की भाषा में है।

पॉल रॉबसन (1898-1976) अमरीका में एक गरीब अश्वेत परिवार में जन्मे थे। उन्होंने आजीवन अश्वेत लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने अपने गायकी जीवन की शुरुआत एक अश्वेत लोक-गीत गायक के रूप में की।

1936-39 में स्पेन में फासीवाद के उत्थान के खिलाफ एक अन्तर्राष्ट्रीय मुहिम छिड़ी थी जिसमें कई देशों के युवाओं ने हिस्सा लिया। अमरीका के अन्य युवाओं के साथ रॉबसन भी स्पेन गए और वहां उन्होंने फासिस्टों के खिलाफ कई कार्यक्रम चलाए।

उस समय तक वे बीस भाषाओं में गीत गाते थे और सपूर्ण विश्व में मानवीयता के संघर्ष के प्रतीक बन गए। गरीबों और अश्वेतों पर अत्याचार के खिलाफ उनके वक्तव्यों ने अमरीकी सरकार को नाखुश कर दिया जिस कारण उनके अपने देश में ही उनके आने पर रोक लगा दी गई।

इस प्रतिबन्ध के खिलाफ तुर्की के क्रान्तिकारी कवि नाज़िम हिकमत ने यह गाना लिखा। ●

तुम को शहीदों भूले नहीं हम

तुम को शहीदों
भूले नहीं हम
भूली नहीं संग्रामी जनता
भूला नहीं रक्त-रंजित लाल निशान
भूली नहीं विप्लवी क्षमता।

व्यर्थ न होगा रक्त तेरा जलेगा विद्रोही सीने में
इस लहू से रंगी छटा खिल उठी सूर्योदय में।
तुम को शहीदों...

कसम ली है होगा पूरा प्रतिशोध हमारा महान
न सहा न सहेंगे और अब हम
तेरा ये अपमान।
तुम को शहीदों...

बांग्ला रचना का हिन्दी अनुवाद - प्रतिध्वनि। बंगाल में साठ के दशक के दौरान चले क्रान्तिकारी आंदोलन में गाया जाने वाला एक गीत। ●

दरबारे वतन

दरबारे वतन में जब इक दिन,
सब जाने वाले जाएंगे।
कुछ अपनी सज़ा को पहुंचेंगे,
कुछ अपनी जज़ा ले जाएंगे।

ऐ खाकनशीनों उठ बैठो,
वो वक्त करीब आ पहुंचा है।
जब तख़्त गिराये जाएंगे,
जब ताज उछाले जाएंगे।

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें,
अब ज़िन्दानों की खैर नहीं।
जो दरिया झूम के उठ्ठे हैं,
तिनकों से न टाले जाएंगे।

ऐ ज़ुल्म के मातो लब खोलो,
चुप रहने वालो चुप कब तक।
कुछ हश्र तो उनसे उठ्ठेगा,
कुछ दूर तो नाले जाएंगे।

कटते भी चलो बढ़ते भी चलो,
बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत।
चलते ही चलो कि अब डेरे,
मंज़िल ही पे डाले जाएंगे।

● फैज़ अहमद फैज़

फैज़ अहमद फैज़ (1911-87), इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ उर्दू शायरों में एक नाम। उन्होंने पाकिस्तानी तानाशाहों के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया। ●

आधा आकाश नारी है

ये है अनगिनत तारों का आधा
नारी उठाये आधा आकाश, शेष पुरुष संसार
आधा आकाश नारी है।

विद्रोह के संगीत में नर है स्वर संगीत
और नारी है ताल।
नर नारी के एक साथ संघर्ष का नाम है तूफान
दोनों के एक संग जीत का वो है सही निशान
नारी उठाये आधा. . .

एक साथ मिलते हैं जब इंकलाब की राह पर
एक साथ बढ़ते हैं जब इंकलाब की राह पर
हमारा नाम त्याग है ये ज़र्मी संग्रामी है
हमारा नाम त्याग है।

मूल तेलुगु रचना से हिन्दी रूपान्तर और धुन प्रतिध्वनि। ●
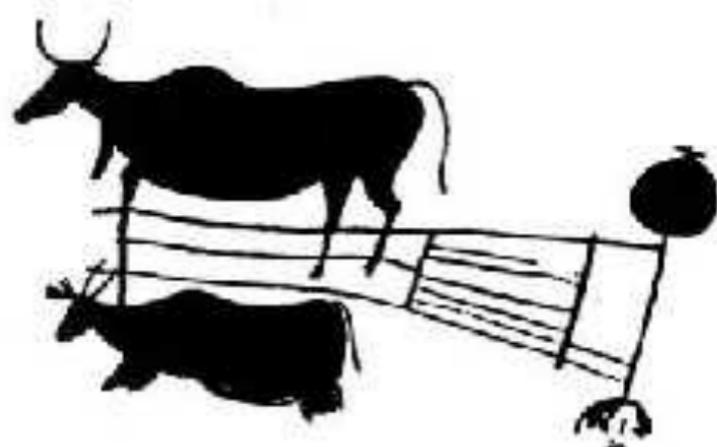
इंटरनेशनल

उठो जागो भूखे बंदी
अब खींचो लाल तलवार
कब तक सहेंगे भाई ज़ालिम के अत्याचार
हमारे रक्त से रंजित क्रंदन
अब दसों दिशा लाल रंग
सौ-सौ बरस का बंधन एक साथ करेंगे भंग
ये अंतिम जंग है जिसको जीतेंगे हम एक साथ
गाओ इंटरनेशनल भव स्वतंत्रता का गान।

● यूजीन पोतिए

सन् 1871 में फ्रांस के शासकों ने जर्मनी की सेनाओं के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। पेरिस के आम लोगों ने अपनी सरकार का यह निर्णय अस्वीकार कर दिया। इन लोगों ने पेरिस कम्यून बनाई और अपनी आत्म-रक्षा का प्रयत्न किया। उन्होंने समानता और पारस्परिक सहयोग पर आधारित एक समाजवादी व्यवस्था लाने की कोशिश की। फ्रांस के शासकों ने जर्मनी की सहायता से हजारों मज़दूरों की हत्या करके पेरिस कम्यून को समाप्त कर दिया। इस लम्बी लड़ाई की हार के क्षणों में यह गीत रचा गया। गीत में कम्यून के संघर्ष और उसकी आकांक्षाओं को सामने लाने की कोशिश की गई है। यह गीत बाद में 'इंटरनेशनल' के नाम से जाना गया। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन इसे अपना गीत मानता है। ●

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है. . .
नहीं डर किसी का आज के दिन।

होगी शान्ति चारों ओर एक दिन
हो मन में है विश्वास. . .
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।

अमरीका के अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग (1929-1968) का गीत। मार्टिन लूथर 60 के दशक में अश्वेत लोगों के अधिकारों के जुझारु साथी बन कर उभरे।

वे चर्च से जुड़े थे और गांधीवादी अहिंसात्मक आंदोलन में विश्वास रखते थे। उनके नेतृत्व में अश्वेतों ने अमरीकी सरकार की रंगभेद नीति के खिलाफ मानवाधिकार आंदोलन छेड़ा। इस संघर्ष के दौरान उन्हें जेल में डाला गया, उनके घर पर बम फेंके गए, और उन्हें तरह-तरह से सताया गया। अन्ततः 1968 में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। यह गीत उनके अरमानों और सपनों का गीत है जिसे दुनिया भर के जन-आंदोलनों ने अपना लिया।

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर
हमें को भी पाला था मां-बाप ने दुख सह सहकर
वक़्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आए कहकर
गोद में आंसू जो टपके कभी रुख से बहकर
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को

नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके
आपके अज़वे बदन होवें जुदा कट कट के
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए कसम खाने को

अपनी किस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था
रंज रक्खा था, महन रक्खा था, ग़म रक्खा था
किस को परवाह थी और किस में यह दम रक्खा था
हमने जब वादिए गुर्बत में कदम रक्खा था
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

अपना कुछ ग़म ही नहीं पर यह ख्याल आता है
मादरे हिन्द पे कब तक ये ज़वाल आता है
देश आज़ादी का कब हिन्द में साल आता है
कौम अपनी पे तो रह रह के मलाल आता है
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को

● रामप्रसाद बिस्मिल

ये किसका लहू है कौन मरा

ऐ रहबरे मुल्को कौम बता
आंखें तो उठा नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुनें हम को भी बता
ये किसका लहू है कौन मरा।

धरती की सुलगती छाती पर
बेचैन शरारे पूछते हैं
हम लोग जिन्हें अपना न सके
वे खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की जुबां चिल्लाती है
सागर के किनारे पूछते हैं।
ये किसका . . .

ऐ अज़्मे फना देने वालो
पैग़ामे वफा देने वालो
अब आग से क्यूं कतराते हो
मौजों को हवा देने वालो
तूफान से अब क्यूं डरते हो
शोलों को हवा देने वालो
क्या भूल गए अपना नारा।
ये किसका . . .

हम ठान चुके हैं अब जी में
हर ज़ालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो
हम आगे बढ़ते जाएंगे
हम मंज़िले आज़ादी की कसम
हर मंज़िल पे दोहरायेंगे।
ये किसका . . .

● साहिर लुधियानवी

नदिया के पार

नइया लगाव तनी भइया हो मलहवा
जाए के बा नदिया के पार
उहे बाटे लउकत धुंधर दियरवा
जहां बाटे घरवा हमार
नदी का किछरवा बसल मोर गइयां
जंहवा बितल भइया मोर लइकइयां
पेटवा के जरल धइनी कलकतिया
बिपती में केहू नाहीं होखेला संघतिया
पंचवे बरिस पर जात बानी घरवा
धरकत मनवा हमार। नइया लगाव. . .

बुढ़वा हो गइनी हम करिके नौकरिया
तबहूं त रहि गइल सुखवा सपनवां
पंतिया लिखाई इया भेजे कलपनवां
फिकिर से तड़फत रहत परनवां
बाड़ी मोर इयवा बेमार। नइया लगाव. . .

हमहूं बेहाल नाही छूटत जड़इया
साथवा में बाटे खाली लाई के गंठरिया
धरनी हमार उहां करे मजदूरिया
रोई रोई पेन्हे एगो क्षिरकुट सड़िया
गिरल बुझात मोर टुटही मरइया
कइसे ई बेड़ा होई पार। नइया लगाव. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

दउरल आई जब नन्हका लइकवा
मांगे लागी जब लाल भगई वो मीठवा
फाटि जइहैं भइया मोर पथर करेजवा
अंखिया में लोर नाहीं बचल धीरजवा
चारू ओर भइल अन्हार ना सूझत किछु
नइया पड़ल मझधार। नइया लगाव. . .

● बसंत कुमार

इस गीत में एक मज़दूर की ज़िंदगी का चित्रण किया गया है। गांव से भागकर वह कलकत्ता जाता है। लेकिन वहां भी घोर परिश्रम के बावजूद उसकी गरीबी बनी रहती है। वह मलेरिया का शिकार हो गया है। बरसों बाद गांव वापस जा रहा है लेकिन उसके पास एक गठरी के अलावा कुछ नहीं है। ●

अजदिया हमरा के भावेले

गुलमियां अब हम नाहीं बजइबो
अजदिया हमरा के भावेले
झीनी-झीनी बीनी चदरिया
लहरेले तोहरे कान्हे हो लहरेले
जब हम तन के परदा मांगी
आवे सिपहिया बान्हे
सिपहिया से अब नाही बन्हइबो
चदरिया हमरा के भावेले।

कंकड़ चुनि-चुनि महल बनवली
हम भइली परदेसी हो
तोहरे कनुनियां मारल गइली
कहवो भईल ना पेसी
कनुनियां ऐसन हम नाहीं मनबो
महलिया हमरा के भावेले।

दिनवा खदनिया से सोना निकलली
रतिया लगौली अंगूठा हो
सगरो जिनगिया करज में डूबलि
कइली हिसबवा झूठा
जिनगिया अब हम नाहीं डुबइबो
अछरिया हमरा के भावेले।

हमरे जंगरवा से धरती फुलाली
फुलवा में खुशबू भरेले हो
हमके बंधुकिया से कइली बेदखली
तोहरे मालिकइ चलेले
धरतिया अब हम नाहीं गंवइबो
बंधुकिया हमरा के भावेले।

● गोरख पाण्डेय

इस गाने में गुलामी, निरक्षरता और सामन्ती शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है। ●

सपन एक देखलीं

सुतल रहलीं सपन एक देखलीं
सपन मनभावन हो सखिया।
फूटली किरिनिया पुरब असमनवा
उजर घर आंगन हो सखिया।
अंखिया के नीरवा भईल खेत सोनवा
त खेत भईल आपन हो सखिया।
गोसैयां के लठिया मुरइया अस तूरली
भगवली महाजन हो सखिया।
केहु नाहीं ऊंचा नीचा केहु का न भय नाहीं
केहु वा भयावन हो सखिया।
मेहनत माटी चारों ओर चमकवली
ढहल इनरासन हो सखिया।
बइरी पईसवा के रजवा मिटवलीं
मिलल मोर साजन हो सखिया।

● गोरख पाण्डेय

इस कविता में गांव की एक वधु का दर्द चित्रित किया गया है। एक दिन सपने में वो देखती है कि यह अंधेरी रात खत्म हो जाती है। एक नया ज़माना आता है जब खेत खलिहान उसके अपने हो जाते हैं और ज़मींदार वर्ग की पराजय हो जाती है। ●

गोरख पाण्डेय (1945-1989) भोजपुरी और हिन्दी के क्रान्तिकारी कवि थे। 1969 में वे किसान आंदोलन से जुड़े और उनकी कविताओं ने उन वेदनाओं-संघर्षों को मुखरता दी। प्रतिध्वनि को ये गीत उन्होंने स्वयं सिखाए थे। ●

हम ज़ुल्म से लड़ने वाले

हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम कोरिया में, हम हैं हिन्दुस्तान में
हम रूस में हैं, चीन में, जापान में
हम अमरीका में, हम हैं इंग्लिस्तान में
हम हैं दुनिया के हर सच्चे इन्सान में
हम क्या गोरे क्या काले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

इन बस्तियों को जगमगाना है सदा
इन खेतियों को लहलहाना है सदा
उठाओ हाथ गाओ गीत अमन के
कि ज़िन्दगी के गीत गाने हैं सदा
हम मौत पे हंसने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

हम बच्चों की मुस्कान बेचते नहीं
हम माओं के अरमान बेचते नहीं
एटम के और दौलत के बाज़ार में
हम इन्सानों की जान बेचते नहीं
आज़ादों के मतवाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

हम अजंता और ताज के फ़नकार हैं
हम पेरिस के और रोम के श्रृंगार हैं
हम हंसते-गाते कारखानों के गीत हैं
हम चलती-फिरती सड़कों की रफ़्तार हैं
हम जीवन के उजियारे, सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

पॉल रॉबसन

वो हमारे गीत क्यों रोकना चाहते हैं
नीग्रो भाई हमारे पाल रॉबसन।

हम अपनी आवाज़ उठा रहे हैं
वो नाराज़ क्यों – 2
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

वो डरते हैं ज़िन्दगी से, वो डरते हैं मौत से
वो डरते हैं इतिहास से
वो डरते हैं, रॉबसन।

हमारे ये कदमों से डरते हैं
जनता की ये चेतना से डरते हैं, रॉबसन
वो क्रान्ति के जय-डम्बरू से डरते हैं, रॉबसन
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

● नाज़िम हिकमत

उठाओ आवाज़

जंगखोर, चारों ओर, हो रहे हैं तैयार
कर रहे वार वे शांति पे बार-बार
कमर कसो, हो तैयार, मिलके उठाओ आवाज़
उठाओ आवाज़, जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ आवाज़।

महलों की जगमगाती रोशनी और न झिलमिलाए
खूंखार सांप अपना फन कभी उठा न पाए
बीसवीं सदी को देखो जंग से छिन्न भिन्न आज।
उठाओ आवाज़ . . .

हमलेवार बाज आज खून की तलाश में
प्यार प्रीत चैन-अमन मिटाने के जुनून में
मुस्कुराते बच्चों के हरे-भरे जहान में
उठा धुआं बारूद का हवा में आसमान में
जंग नहीं, जंग नहीं, एकता का छेड़ो साज़।
उठाओ आवाज़ . . .

अब नहीं, और नहीं सहना

अब नहीं, और नहीं सहना
विश्व के द्वार पर युद्ध की गर्जना
अब नहीं, और नहीं सहना

मुक्त दिन, मुक्त प्राण, मुक्त हर सांस है
सभ्यता के दुश्मनों को खून की प्यास है
जंगखोर कर रहे हैं युद्ध की घोषणा
अब नहीं, और नहीं सहना

जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ शांति की ध्वजा
एक संग मिलाओ आवाज़, हो न ये विभीषिका
फिर न हो नागासाकी, फिर न हो हिरोशिमा
अब नहीं और नहीं सहना

सर पे आसमान हो सकून का

सर पे आसमान हो सकून का, सकून का
पांव के तले ज़मीन हो जो प्यार दे सके
हवाएं हों जो दुख चुरा के मुस्कुरा के उड़ चलें
अगर जो ऐसा हो सके तो इस जहां को फूंक दो
लहू से तर-बतर हरेक आसमां को फूंक दो

पंछियों के कारवां उड़ें तो फिर थमें नहीं
दूर तक शिकारियों का खौफ हो न जाल हो
सफर न हो उदासियों का जंगलों के रास्ते
किसी के स्वप्न टूटने की न कोई मिसाल हो
अगर जो ऐसा हो सके . . .

फसल से बात करके घर में सुख से सोए हर किसान
चिमनियों की आग में जलें न चाहतों के घर
सभी के ओंठ गा उठें हरेक दिल में गीत हो
किसी की आंख में न दुश्मनी का बच सके ज़हर
अगर जो ऐसा हो सके . . .

अपने मन में भर सुबह के सूर्य की उजास को
नई इमारतों की नींव में जो सर बिछा सको
ज़िन्दगी को मौत से अगर जो तुम बचा सको
जलाओ ये जहां अगर नया जहां बना सको

नया-जहां बना सको तो इस जहां को फूंक दो
लहू से तर-बतर हरेक आसमां को फूंक दो

● ब्रजमोहन

वो सब कुछ करने को तैयार

वो सब कुछ करने को तैयार
सभी अफसर उनके
जेल और सुधार घर उनके
सभी दफ्तर उनके
वो सब कुछ . . .

कानूनी किताबें उनकी
कारखाने हथियारों के
पादरी प्रोफेसर उनके
जज और जेलर तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ . . .

अखबार, छापेखाने
हमें.अपना बनाने के
बहाने चुप कराने के
नेता और गुण्डे तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ . . .

एक दिन ऐसा आएगा
पैसा फिर काम न आएगा
धरा हथियार रह जाएगा
और ये जल्दी ही होगा - 2
ये ढांचा बदल जाएगा - 3

● ब्रेख़्त

तुम को शहीदों भूले नहीं हम

तुमको शहीदों
भूले नहीं हम
भूली नहीं संग्रामी जनता
भूला नहीं रक्तरंजित लाल निशान
भूली नहीं विप्लवी क्षमता
तुमको शहीदों . . .

कसम ली है होगा पूरा
प्रतिशोध हमारा महान
न सहा, न सहेंगे और अब हम
तेरा यह अपमान
तुमको शहीदों . . .

व्यर्थ न होगा रक्त तेरा
जलेगा विद्रोही सीने में
इस लहू से रंगी छटा
खिल उठेगी सूर्योदय में
तुमको शहीदों . . .

कोहराम मचा देंगे

हर दिल में बगावत के शोलों को जला देंगे
हम जंगे अवामी से कोहराम मचा देंगे
हो जाएगी ये दुनिया फिर तेरे नसीबों की
मज़दूर किसानों की, भूखों की, गरीबों की
रौंदे हुए ज़र्रों को खुरशीद बना देंगे।
खुरशीद बना देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

हक्क छीनने वालों से उम्मीदे-करम क्यों हो
इन सांप लुटेरों से हमको यह भ्रम क्यों हो
हम ताकते बाजू से जाबिर को मिटा देंगे।
जाबिर को मिटा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

महकूम जो उठ बैठें हर जुल्म पे भारी है
ये खेत हमारे हैं मिलें भी हमारी हैं
हर चीज़ हमारी है हाकम को बता देंगे।
हाकम को बता देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

किस्मत के कलोरों से बहलाया गया हमें
तोपों से, फरेबों से हथियाया गया हमें
यह झूठ का सिंहासन ठोकर से गिरा देंगे।
ठोकर से गिरा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

कुछ सोच के ही हमने तलवार निकाली है
हालात से तंग आकर बन्दूक संभाली है
हम खूने सितमगर से धरती को सजा देंगे।
धरती को सजा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

फिर जागा तेलंगाना, बंगाल ने करवट ली
हर खेत सुलग उठे, फिर आतिशे ग़म भड़की
इन कहर के शोलों से शैतान जला देंगे।
शैतान जला देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

दिल्ली के खुदा बन्दों एलान हमारा है
ऐ कातिलों बदकारों फरमान हमारा है
तुम दुश्मन-इन्सां हो हम तुम्हें उड़ा देंगे।
हम तुम्हें उड़ा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

दिल्ली दूर नहीं है यारो

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दिल्ली के असली हकदारो। दिल्ली दूर . . .

भूखे पेटों, नंगे बदनों
दुख के पोसों दर्द के पालों
हम वतनों अफ़लास के मारों

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दो फूकों से गिर जाएगी
शीशा फूटके रह जाएगा
जादू टूट के रह जाएगा।

नित दिन को पौ फटने से पहले
तपते सूरज की गर्मी में
शाम के साये ढल जाने तक
तुम हल जोतो फसल उगाओ
खेत का ज़र्रा-ज़र्रा सींचो हंसते गाते खून बहाओ
लेकिन खुद भूखे के भूखे, तुम पर यह भी जब्र हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है
सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर . . .

फाकों से तंग आकर अक्सर
तुमने खुदकशियां भी की हैं
मीनारों से कूद पड़े हो
गाड़ी के पहिओं से लड़े हो
बीबी को नीलाम किया है, बहन का चर्चा आम किया है
तुम पर यह भी जब्र हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है, सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर...

हम वतनों अफ़लास के मारों
दिल्ली के असली हकदारों
खेतों की आगोश से उट्ठो
ले हाथों में लावा उगलो
गंदम के बोरों तक फैलो
धान के गोदामों तक नाचो
तेशे भाले नेजे खंजर हाथ में जो कुछ भी है थामो
आंधी वाला रूप बना के, तूफानी जुरत अपना के
डेरे डालो नगरी-नगरी
कहर मचा दो बस्ती-बस्ती

हम मुट्ठी भर दानों की खातिर
तुमने सदियों सब्र किया है
सब्र की आखिर हद होती है
जब्र की आखिर हद होती है।
दिल्ली दूर...

इस बार लड़ाई लाने वाला

इस बार लड़ाई लाने वाला, बच के न जाने पाएगा
तू धन दौलत का लोभी डाकू, पिसने वालों की दुनिया में
गर आग लगाने आएगा, इस आग में खुद जल जाएगा

तुम एटम बम, डॉलर के व्यापारी, मददगार गद्दारों के
है लूट तुम्हारा धर्म, पुजारी तुम खूनी तलवारों के
हमको डर किसका, भूत तुम्हारा तुमको ही खा जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

हम माथे का सिंदूर, गरजता गाढ़ा खून न बेचेंगे
नन्हें बच्चों की हंसी न बेचेंगे, हम खुशी न बेचेंगे
नर-नारी का व्यापारी, मौत के हाथों खुद बिक जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

तुम फौज लिए जिन सड़कों से गुजरोगे, हम टक्कर लेंगे
आकाश में शोले बन के उड़ेंगे, हम सागर खौला देंगे
जो चाल चलेगा हिटलर की, हिटलर की तरह मिट जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

तोड़ो बन्धन तोड़ो. . .

तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

हम क्या जानें भारत में भी आया अपना राज
ओ भैया आया अपना राज
आज भी हम भूखे-नंगे हैं आज भी हम मोहताज
ओ भैया आज भी हम मोहताज

रोटी मांगें तो खायें हम लाठी-गोली आज
थैलीशाहों की ठोकर में है सारे देश की लाज
ऐ मज़दूर किसानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
ऐ छात्रों और जवानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

सौ-सौ वादे करके हमसे लिये जिन्होंने वोट
ओ भैया लिये जिन्होंने वोट
गरीबी हटाओ कह के हमको देते हैं ये चोट
ओ भैया देते हैं वो चोट

नौकरी मांगें नारे मिलते कैसा झूठा राज
शोषण के जूतों से पिसकर रोता भारत आज
ऐ मज़दूर किसानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
ऐ छात्रों और जवानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

● इप्टा

जाम करो मिलके

खाने को ना रोटी देंगे किशन कन्हैया
जाम करो मिलके ये शोषण का पहिया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया - 2
तेरी ही कमाई पे खड़े ये कारखाने - 2
तुझको ही मिलते ना पेट-भर दाने - 2
गिद्धों के जैसा तुझसे मालिक का रवैया - 2
मालिकों से . . .

हमसे ना कम होगी मालिकों की दूरी - 2
खून चूस-चूस के जो देता है मजूरी - 2
अपनी नैया के हम ही खिवैया - 2
मालिकों से . . .

अपने दिलों में सदा उनके ही गीत - 2
चाहते बदलना जो दुनिया की रीत - 2
सीने में हमारे जिंदा किश्ता-भूमैया - 2
मालिकों से . . .

● ब्रजमोहन

संघर्ष हमारा नारा है

हर जोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
तुमने मांगें ठुकराई हैं तुमने तोड़ा है हर वादा
छीना हमसे सस्ता अनाज तुम छटनी पर हो आमादा
लो अपनी भी तैयारी है लो हमने भी ललकारा है
हर जोर-जुल्म . . .

मत करो बहाने संकट है घाटा दिखलाना फैशन है
इन बनियों चोर लुटेरों को क्या सरकारी कंसेशन है
बगलें मत झांको दो जवाब क्या यही स्वराज तुम्हारा है
हर जोर-जुल्म . . .

समझौता कैसा समझौता, हमला तो तुमने बोला है
महंगी ने हमें निगलने को दानव जैसा मुंह खोला है
हम मौत के जबड़े तोड़ेंगे, एका हथियार हमारा है
हर जोर-जुल्म की . . .

अब संभलें समझौतापरस्त जनता को जो करते यतीम
हम सब समझौतेबाजों को अब अलग करेंगे बीन-बीन
जो रोकेगा बह जाएगा, ये वो तूफानी धारा है
हर जोर-जुल्म . . .

● शंकर शैलेन्द्र

हड़ताल का गीत

जब तक मालिक की नस-नस को हिला न दे भूचाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल
न टूटे हड़ताल हमारी न टूटे हड़ताल

हम इतने सारों को मिल ये गिद्ध अकेला खाता
और हमारे हिस्से का भी अपने घर ले जाता
हक मांगें हम अपना तो ये गुण्डों को बुलवाता
हम सबका शोषण करने को चले ये सौ-सौ चाल
जारी है . . .

सावधान ऐसे लोगों से जो बिचौलिया होते
और हमारे बीच सदा जो बीज फूट के बोते
और कि जिनके दम पर अफसर मालिक चैन से सोते
देखेंगे उनको भी जो हैं सरकारी दलाल
जारी है . . .

सही-सही मांगों को लेकर जब हम सामने आए
इसके अपने सगे सिपाही बन्दूकें ले आए
जाने अपने कितने साथी इसने ही मरवाए
लेकिन सुन लो अब हम सारे जलकर बने मशाल
जारी है . . .

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे – 2
माटी से हीरा उगानेवाले भाई रे – 2
अपना पसीना बहानेवाले भाई रे – 2
उठ, तेरी मेहनत को लूटें हैं कसाई रे
धरती को सोना . . .

मिल, कोठी, कारें, ये सड़कें ये इंजन – 2
इन सब में तेरी ही मेहनत की धड़कन – 2
तेरे ही हाथों ने दुनिया बनाई – 2
तूने ही भरपेट रोटी न खाई – 2
हंसी तेरे होठों की किसने चुराई रे
धरती को सोना . . .

मिल-कारखानों में, कोयला-खदानों में – 2
खेत-खलिहानों में, सोने की खानों में – 2
बहता है तेरा ही खून पसीना – 2
ज़ालिम लुटेरों का पत्थर का सीना – 2
सेठों के पेटों में है तेरी कमाई रे
धरती को सोना . . .

धरती भी तेरी ये अम्बर भी तेरा – 2
तुझको ही लाना है अपना सवेरा – 2
तू ही अंधेरों में सूरज है भाई – 2
तू ही लड़ेगा, सुबह की लड़ाई – 2
तभी सारी दुनिया ये लेगी अंगड़ाई रे
धरती को सोना . . .

● ब्रजमोहन

जवानियां उठो. . .

जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें पुकारते,
जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें निहारते।

उठो कि जात-पात का गुबार धुल के मिट सके,
उठो कि ऊंच-नीच का जहां में फर्क मिट सके।

कोई किसी पे ज़ोर-ज़ुल्म अब न कर सके यहां,
अकाल और भूख से कोई न मर सके यहां।

उठो कि आंसुओं का राज इस ज़मीं से खत्म हो,
उठो कि हिटलरी मिज़ाज इस ज़मीं से खत्म हो।

उठो कि ज़िन्दगी का आफ़ताब जगमगा सके,
उठो कि मौत का निशान अब न सर उठा सके।

जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें पुकारते,
जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें निहारते।

उठो साथियो. . .

उठो साथियो आज चलें हम मुक्त कराने देश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को

देखो बिड़ला-टाटा-बाटा - 2
कहते रोज़-रोज़ का घाटा - 2
अपने घर की भरें तिजोरी भेजें माल विदेश को - 2
सदियों से गुलाम. . .

देखो जाति धरम का घेरा - 2
देखो दल्लालों का फेरा - 2
पण्डित, नेता, सेठ, मौलवी लूटें अपने देश को - 2
सदियों से गुलाम...

लकदक नेता खद्दर-धारी - 2
कुर्सी लालच मारा-मारी - 2
बगुला भगत बनें जनता में नोचो नकली भेष को - 2
सदियों से गुलाम...

मालिक अपनाए हथकण्डे - 2
उसके कई पालतू गुण्डे - 2
नेता-अफसर उसके बन्दे - 2
खाते हम सरकारी डण्डे - 2
कोर्ट कचहरी, अंधी, बहरी नहीं सुनेगी केस को - 2
सदियों से गुलाम...
बहती गंगा-जमुना धारा - 2
सारा हिन्दुस्तान हमारा- 2
अपना खुद ही बनें सहारा - 2
एका यही समय का नारा - 2
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन एक करें हम देश को - 2
सदियों से गुलाम...

● अरविंद चतुर्वेदी

गांव-गांव से उठो . . .

गांव-गांव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो - 2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो - 2

हाथ में जिसके कलम है कलम लिये उठो - 2
बाजा बजाने वालों तुम बाजा लिये उठो - 2
गांव-गांव से उठो. . .

हाथ में जिसके औज़ार है औज़ार लिये उठो - 2
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज लिये उठो - 2
गांव-गांव से उठो. . .

● नेपाली लोकगीत से

तू आ कदम मिला. . .

ये फैसले का वक्त है तू आ कदम मिला
ये इम्तिहान सख्त है तू आ कदम मिला।

हर दिशा में भोर के सूरज निकल रहे
आस्मां में लाल फरेरे मचल रहे
मुक्ति-कारवां से कारवां मिल रहे
तू बोल किसके साथ है, तू आ ज़रा बता।
ये फैसले का वक्त है. . .

कैद में पड़ी हुई ज़मीं बुला रही
चीखती हुई ये मशीनें बुला रहीं
बेजार बेकरार हवाएं बुला रहीं
ये जंगे-इन्किलाब है तू आ लहू मिला।
ये फैसले का वक्त है. . .

गा रही अंधेरी रात में दिये की लौ
अब जहां से अंधकार को समेट दो
हर ओर ज़िंदगी की रोशनी बिखेर दो
ये ज़िंदगी का गीत है ज़िंदा लबों से गा।
ये फैसले का वक्त है. . .

● आनन्द क्रान्तिवर्धन

वतन तुम्हारा नौजवान

तुम्हें वतन पुकारता, वतन तुम्हारा नौजवान
जागे हैं वतन के लोग, जागा है सारा जहां
आ... वतन तुम्हारा नौजवान

बीत गये यूं ही तो बहुत दिन, बहुत दिन
वक्त मांगे एकता विभेदहीन, विभेदहीन
तुम्हारा प्रण मेरा वतन जगायेगा नवचेतना
पुकारता...आ...वतन तुम्हारा नौजवान

कभी तो आयेगा वो दिन सुबह मुस्करायेगी
नहीं है डर
चिराग जले ये रात ढले, ये गम के चार दिन
कभी तो आयेगा समीर झूम के
खिलेंगे सौ फूल उसे चूमके
सदियों से जो सोये हैं अंगड़ाई ले के उठेंगे
पुकारता...आ...वतन तुम्हारा नौजवान

● सलिल चौधरी

एक हैं हमारी आज राहें

एक है हमारी आज राहें
और एक है हमारा आज गान
चाहे लाख तूफान आयें
रहेंगे एक सब जहां के नौजवान

हरेक देश और हर जाति
जवानों के ही दम से जगमगाती
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इक नया जहां
कि जिसमें हो न जुल्म का निशान

गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिये लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो

हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलते हैं ज़मीनो-आसमान

एक है हमारी आज आशा
और एक है हमारा अरमान
कोई देश हो या कोई भाषा
पर समझते है दिलों की हम जुबान

हम फर्क ऊंच-नीच का न जानें
न भेद जात-पात का ही मानें
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इक नया जहां
कि जिसमें हो न ज़ुल्म का निशान

गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिये लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो

हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलते हैं ज़मीनो-आसमान
एक हैं हमारी आज राहें ...

● इप्टा
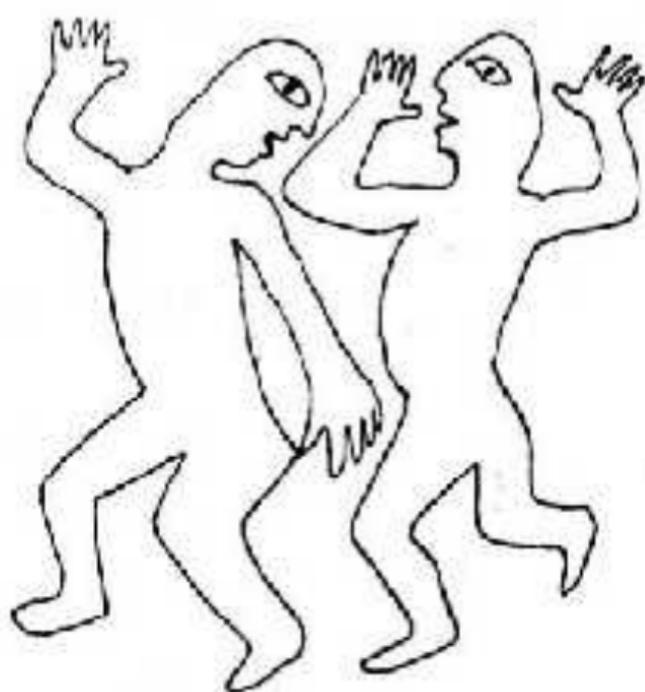
इस जहान में ज़िंदगी के गीत गाएं

हम सब इस जहान में ज़िंदगी के गीत गाएं
मुक्ति के गीत गाएं, गीत गाएं

गीतों से आंधियां मचल उठें
लाल फूल हर तरफ खिल उठे
नग्मों से डर के मौत भाग जाए
सुन के सुर ज़िंदगी सुराग पाए
रात में चिराग आशा का जले
इस जहां में हम वो गीत गाए जाएं

भंग निराशा का करे जो अंधकार
मौत के जो तोड़ दे कारागार
कारवां-ए-आज़ादी में आ मिले
शोषितों के प्राण मिल के संग चले
एकता और मित्रता के गीत ये
इस जहां में हम सदा ही गाए जाएं

साथियो सलाम है सलाम है सलाम

साथियो सलाम है सलाम है सलाम
इस देश की आज़ादियां, हैं तुम्हें बुला रहीं
जातिवादी बेड़ियां, झनझना के गा रहीं
क़ुबूल हो आज़ादियां, तोड़ दो ये बेड़ियां
प्रण करो यहां अभी, प्रण करो यहां सभी
तुम्हारे ही हाथ में, देश की लगाम है।
साथियो सलाम है . . .

घुन समाज में मची दूर तुम उसे करो
बुझ रहा जला दिया, खून से इसे भरो
ये देश लहलहा उठे, भारतीय गा उठे
विश्व में आवाज़ है, विश्व में पुकार है
तुम्हारे ही हाथ में, देश की लगाम है।
साथियो सलाम है . . .

शहीदों की चिताओं पर

आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों की चिताओं पर खड़ी हुई स्वतंत्रता
आज लड़खड़ा रही है क्या हुआ किसे पता - 2
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

कुर्बानियों के बाद ये स्वतंत्रता मिली है
लबों पे मुस्कराहटें अभी-अभी खिलीं हैं - 2
धुंआ किधर से उठ रहा, ये लूट आग कैसी
ये गोलियों की बरखा, ये भूख प्यास कैसी
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

देश के जवान आज किस तरफ चले हैं
क्या भूल ये चुके हैं किस गोद में पले हैं - 2
माता पुकारती है मेरे लाल लौट आओ
ये देश जल रहा है उठकर इसे बचाओ
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

होंगे कामयाब. . .

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन।

● मार्टिन लूथर किंग

पर्वतों को फोड़कर

पर्वतों को फोड़कर, पत्थरों को तोड़कर,
बनायीं परियोजनाएं ईंट-लहू से जोड़कर,
श्रम किसका है? धन किसका है?

जंगल को काटकर, धरती को जोतकर,
फसलें उगाई स्वेद लहरों से सींचकर,
भात किसका है?
माड़ किसका है?

हमने ही ताना और बाना लगाकर,
कपड़े बुने नस-नस को धागा बनाकर,
गर्मी किसकी?
ठिठुरन किसकी?

कल मशीन घुमाई, पैदावार बढ़ाई,
ताकत की बिजली से फैक्टरियां चलाईं
कोठी किसकी?
झुग्गी किसकी?

कारण समझ लिए, हथियार उठा लिए
क्रांति हम चलाएंगे युद्ध बिना बंद किए
मौत तुम्हारी।
जीत हमारी।

● चेराबण्डाराजु

आज़ादी कैसी ? किसकी?

कौन आज़ाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी का
मादरे हिन्द के चेहरे पे उदासी है वही
कौन आज़ाद हुआ . . .

खंजर आज़ाद है सीने में उतरने के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पे गुज़रने के लिए
कौन आज़ाद हुआ . . .

काले बाज़ार में बदशक्ल चुड़ैलों की तरह
कीमतें काली दुकानों पे खड़ी रहती हैं
हर खरीददार की जेबों को कतरने के लिए
कौन आज़ाद हुआ . . .

कारखानों में लगा रहता है
सांस लेती हुई लाशों का हुजूम
बीच में उनके फिरा करती बेकारी भी
अपने खूंखार दहन खोले हुए
कौन आज़ाद हुआ . . .

रोटियां चकलों की कहबाएं हैं
जिनको सरमाए के दल्लालों ने
नफाखोरी के झरोखों में सजा रक्खा है
बालियां धान की गेहूं के सुनहरे खोशे
मिस्र ओ यूनान के मजबूर गुलामों की तरह
अजनबी देश के बाजारों में बिक जाते हैं
और बदबख्त किसानों की तड़पती हुई रूह
अपने अफलास में मुंह ढांप के सो जाती है
कौन आज़ाद हुआ...

● अली सरदार जाफरी

सौ में सत्तर आदमी. . .

सौ में सत्तर आदमी
फिलहाल जब नाशाद हैं
दिल पे रखकर हाथ कहिये
देश क्या आज़ाद है

कोठियों से मुल्क की,
मयार को मत आंकिये
असली हिन्दुस्तान तो
फुटपाथ पर आबाद है। सौ में सत्तर. . .

सत्ताधारी लड़ पड़े हैं
आज कुत्तों की तरह
सूखी रोटी देखकर
हम मुफलिसों के हाथ में। सौ में सत्तर. . .

जो मिटा पाया न अब तक
भूख के अवसाद को
दफन कर दो आज उस
मफलूस पूंजीवाद को। सौ में सत्तर. . .

बूढ़ा बरगद साक्षी है
गांव की चौपाल पर
रमसुदी की झोंपड़ी भी
ढह गई चौपाल में। सौ में सत्तर. . .
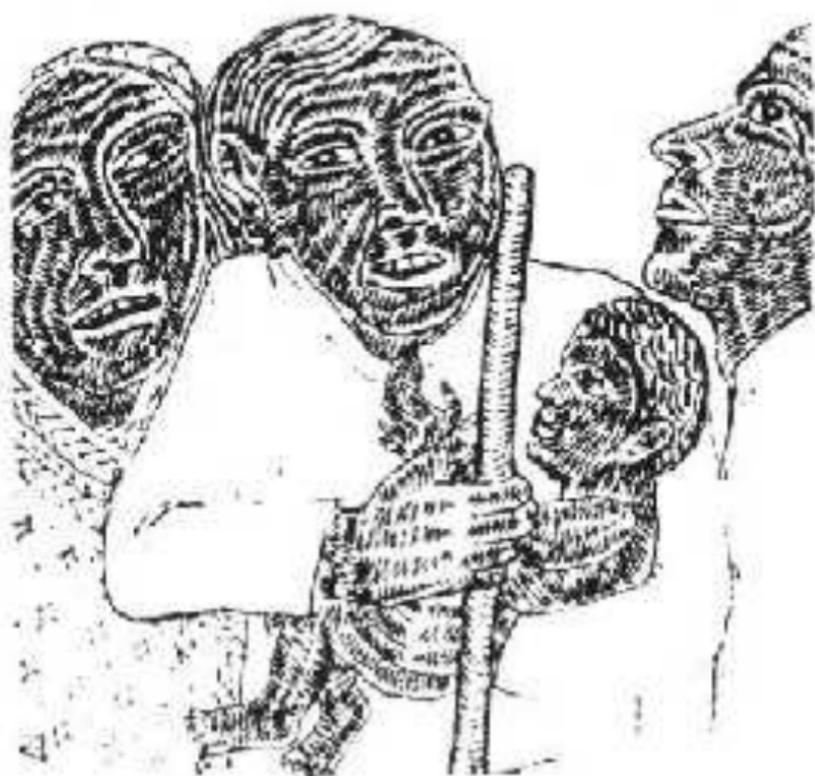
जिस शहर के मुन्तज़िम
अन्धे हों जलवागाह के
उस शहर में रोशनी की
बात बेबुनियाद है। सौ में सत्तर. . .

जो उलझ कर रह गई है
फाईलों के जाल में
रोशनी वो गांव तक,
पहुंचेगी कितने साल में। सौ में सत्तर. . .

● अदम गोंडवी

क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों आसमान में
चकमक करते तारे
और इन्द्रधनुष में
रंग बिरंगे प्यारे
क्यों गुड़हल होता
सुर्ख एकदम लाल
क्यों झिलमिल करता
मकड़ी का जाल
क्यों? क्यों? क्यों?

आम, नीम और इमली
क्यों एक जगह हैं ठहरे
क्यों समुद्र में ऊंची
गिरती पड़ती हैं लहरें
कौए, तोते फर-फर क्यों
आसमान में उड़ते
क्यों बिल्ली के तन पर दो-दो
पंख नहीं उग आते
क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों जुगनू की पीठ पर
जलती हुई मशाल है
क्यों गैंडे हाथी की
पीठ उसकी ढाल है
क्यों पहाड़ की चोटी
सूनी और वीरान है
क्यों हंसती आंखों में
आंसू का सैलाब है
क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों नहीं इन पैसों से
लोगों को राहत मिलती
जिससे सारी दुनिया की
भूखी तस्वीर बदलती
अपनी जुबान का ताला
अब वक्त आ गया खोलो
अपने सारे प्रश्नों को
बेधड़क खड़े हो बोलो
क्यों? क्यों? क्यों?

नफ़स-नफस कदम-कदम

नफ़स-नफस, कदम-कदम
बस एक फिक्र दम-ब-दम
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद–इंकलाब!

जहां अवाम के खिलाफ साजिशें हों शान से
जहां पे बेगुनाह हाथ धो रहे हों जान से
जहां पे लफ्ज़े-अमन एक खौफनाक राज़ हो
जहां कबूतरों का सरपरस्त एक बाज हो
वहां न चुप रहेंगे हम
कहेंगे, हां, कहेंगे हम
हमारा हक! हमारा हक! हमें जवाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब -ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

यकीन आंख मूंद कर किया था जिन पर जान कर
वही हमारी राह में खड़े हैं सीना तान कर
उन्हीं की सरहदों में कैद हैं हमारी बोलियां
वही हमारे थाल में परस रहे हैं गोलियां
जो इनका भेद खोल दे
हरेक बात बोल दे
हमारे हाथ में वही खुली किताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

वतन के नाम पर खुशी से जो हुए हैं बे-वतन
उन्हीं की आह बे-असर, उन्हीं की लाश बे-कफन
लहू पसीना बेचकर जो पेट तक न भर सके
करें तो क्या करें भले न जी सकें, न मर सकें
सियाह ज़िंदगी के नाम
उनकी हर सुबह व शाम
उनके आसमां को सुर्ख आफ्ताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद—इंकलाब!

होशियार! कह रहा लहू के रंग का निशान
ऐ किसान होशियार! होशियार नौजवान
होशियार! दुश्मनों की दाल अब गले नहीं
सफेदपोश रहजनों की चाल अब चले नहीं
जो इनका सर मरोड़ दे
गरूर इनका तोड़ दे
वह सरफरोश आरजू वही शबाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

तसल्लियों के इतने साल बाद अपने हाल पर
निगाह डाल, सोच और सोच कर सवाल कर
किधर गये वो वायदे? सुखों के ख्वाब क्या हुए!
तुझे था जिनका इन्तज़ार वो जवाब क्या हुए?
तू इनकी झूठी बात पर
न और एतबार कर
कि तुझको सांस-सांस का सही हिसाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद–इंकलाब

● शलभ श्रीराम सिंह

ये कैसा राज है भाई

इक कथा सुनो रे लोगों - 2
अरे हम मजदूर की करुण कहानी - 2
और करीब से जानो
इक कथा सुनो रे लोगों - 2
भाईयों.. बहिनों..बहिनों..

अपनी मेहनत से भाई, धरती की हुई खुदाई - 2
माटी में बीज को बोया - 2
धरती को दुल्हन बनाई - 2
पसीना हमने ही बहाया, भूपति ने खूब कमाया - 2
अरे साहूकार के सूद ने हमको, साहूकार के कर्ज ने हमको
गांव से शहर भगाया
अरे दाने दाने को मजदूर तरसे - 2
जीने की कठिनाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये सामन्ती राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों.. बहिनों..बहिनों..

अपनी मेहनत से भाई, धरती की हुई खुदाई - 2
माटी का बनाया गारा - 2
गारे से ईंट बनाई
ईंटों से महल बनाने, पसीना बहाया हमने - 2
धनवान को मिली सुविधा - 2
सुख चैन भुलाया हमने - 2
अरे अपना ही रहने का बांदा - 2
नहीं बना है भाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये धनिकों का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
पहनने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . बहिनों..बहिनों..

अपनी मेहनत से भाई, काटन का सूत बनाया - 2
उसको चढ़ाया व्हील पर - 2
कपड़ा हमने ही बनाया - 2
कपड़े को रंग बिरंगी झालर भी चढ़ाई हमने - 2
टी. बी॰ को भी अपनाया - 2
और माल कमाया धनी ने - 2
अरे हम अधनंगे मुर्दाघाट पे - 2
कफन की भी मंहगाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -

ये मालिकों का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . बहिनों. बहिनों. .

अब खबर सुनो इक ताजी, सरकार की सौदेबाजी - 2
धनवान को खुश रखने को - 2
हमसे ही की दगाबाजी - 2
एक कानून पास करवाया - 2
हमें गुनहगार ठहराया - 2
झोंपड़े को पुलिस के हाथों - 2
बेरहमी से तुड़वाया - 2
अरे तीन साल की सजा भी हो गई - 2
और मिली पिटाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये पुलिस का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . बहिनों. बहिनों. .
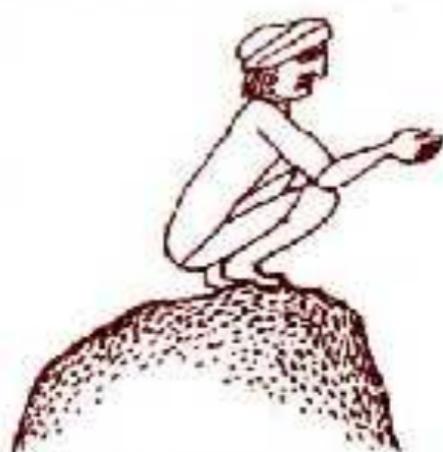
अब जात धर्म को छोडो, मजदूर का रिश्ता जोडो - 2
ऐसी संगठना के बल पर - 2
झूठे संसद को तोडो - 2
जब अपना शासन होगा, सबके घर राशन होगा - 2
दुनिया मजदूर के बल पर - 2
मजदूर का शासन होगा - 2
अरे नारा लगाओ इंकलाब का - 2
तब ही मिटेगी बुराई
ये सब कब होगा भाई
जब मज़दूर का राज होगा
खाने को दाना होगा
पीने को पानी होगा
रहने को घर होगा
ओढ़ने को कपडा होगा
ऐसे राज को लाना भाई - 2
भाईयो.. बहिनो..बहिनो..
ऐसे राज को लाना भाई

("हमारा शहर" फिल्म से)

ISBN. 978-81-87171-17-
मूल्य: 12.00 रुपए